जल विकास समिति का छल

बिहार के सुपौल जिला के सुपौल प्रखंड अन्तर्गत बैरिया पंचायत के बैरिया गांव के साह टोला वास्तव में एक मिहनतकष किसानों का व्यवस्थित टोला है। साह (तेली) जाति के परिवारों का बाहुल्य होने की वजह से यह टोला साह टोला कहलाता है। यद्यपि यहां दलित जाति के लोग भी बसते हैं। यहां षिक्षा का अभाव सा है। यहां शुद्ध किसानों की ग्रामीण संस्कृति, अतिथि सत्कार, श्रम के प्रति अनुराग भोलापन है।

इन्हीं लोगों के बीच रामकिसुन साह का भी एक परिवार था, जो एक अच्छे खाते–पीते पविार में गिना जाता था। उन्हें कोई संतान नहीं थी।

अतः अपनी कृति को अक्षुण्ण रखने के लिये उसने कुएं का निर्माण करना उचित समझा। कुएं का निर्माण करवाए। कालान्तर में वहां उसने षिव मंदिर का निर्माण भी करवाए, जिससे कुएं का महत्व बढ़ गया। इससे व्यक्तिगत सम्पति का स्वरुप छोड़ सामाजिक रुप ग्रहण कर लिया। इसके रख–रखाव की सार्वजनिक जिम्मेवारी बनी। समय–समय पर कुएं की मरम्मती के साथ–साथ उसकी उँचाई को भी बढ़ाया गया।

मेघ पाईन अभियान इस पंचायत में 2006 से कार्यरत है। अतः कुएं की मरम्मती हेतु चयन करने की प्रक्रिया चली तो स्वभाविक ही अपेक्षाकृत अधिक शीतल जल वाले सैकड़ों परिवारों के लिये उपयोगी इस कुएं जिसके जल की मात्रा जलाभिषेक में ही उपयोग नहीं होता, बल्कि अनेक परिवारों की जलापूर्ति इसी पर निर्भर है। यह कुआं थोड़ा ठीक हालत में था। इसकी दीवारों में प्लस्तर की आवष्यकता थी, जगत की उँचाई बढ़ाने की आवष्यकता थी, चबूतरा पूर्णतया ध्वस्त था, नाला नहीं था, चबूतरे के वास्ते सड़क तरफ जमीन भी कम है।

इस कुएं के जीर्णोद्धार करने का संकल्प ग्रामीणों ने लिया। मेघ पाईन अभियान के बजट अनुसार ग्रामीणों ने कुआं मरम्मत का वचन दिया। सर्वसम्मति से मरम्मत की जिम्मवारी श्री उपेन्द्र साह को दी गई। श्री साह ने मेघ पाईन अभियान टीम को आस्वस्थ किया कि वे बजट अनुसार ही कार्य करेंगे। उसने वेहतर कार्य करने का वचन भी दिया। अभियान के कार्यकर्ता कुआं मरम्मत के आवष्यक सभी सामग्री भेजा। श्री साह के बनावटी उत्साह और विष्वास के झलसे में आकर अभियान कार्यकर्ता कुआं स्थल पर जाना कम कर दिये। फिर क्या था जैसे ही मौका मिला कि उन्होनें बजट को दरकिनार कर मनमाने ढंग से चबूतरे की नींव खोद डाली 5 ईंच की जगह 10 ईंच की ईंट जुराई चालू किया। प्रस्तावित 20 फीट नाला की जगह करीब 60 फीट नाला बनवा डाला। यह देखकर मेघ पाईन अभियान कार्यकर्ता वहां पहुंचकर ग्रामीणों के साथ बैठक किया। मेघ पाईन अभियान सुपौल के विकास सहायक एवं ग्राम्यषील के सचिव ने भी ग्रामीणों से बातें की, लेकिन ग्रामीण अपनी बात पर अड़े रहे परिणामस्वरुप 1131 ईंट घट गया, 900 ईंट तो संस्था की ओर से दिया गया, फिर दो बोरी सिमेंट व 20 टीन बालू की भी, अतिरिक्त व्यवस्था मेघ पाईन अभियान द्वारा किया गया।

वर्तमान में इस कुएं की भीतरी भाग का प्लस्तर हो गया है। चबूतरा व नाला बन चुका है। चबूतरे का प्लास्टर लगभग पूरा है। जगत की उँचाई भी बढ़ाई जा चुकी है। बढ़े हुए भाग का करीब एक फीट पलस्तर बचा है जिसे दो–तीन दिन में पूरा कर लिया जाएगा। इसके अलावा कुआं से परंपरागत तरीके से पानी निकालने हेतु आवष्यक उपकरण जैसे – बाल्टी, कड़ी,

ढ़ेकुल आदि की व्यवस्था कर ली गई है। अक्टूबर के अन्त तक यह कुआं पूर्णरुपेण तैसार हो जाएगा।